दिनांक 29-08-1975 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

अब विधि की स्टेज पार कर सिद्धि-स्वरूप बनना है

बहुरूपी बाप समान बच्चे भी बहुरूपी कहलाते
कभी हैं कल्याणकारी कभी वरदाता नजर आते

हो जाए कल्याण हमारा मिल जाए कोई वरदान
इसी कारण दुनिया करती आप सबका आह्वान

अल्पकाल के सुखों का डगमगाने लगा आधार
सारी दुनिया लगा रही केवल आपको ही पुकार

सुख शांति की प्यासी आत्माओं के पास जाओ
प्रेम स्वरूप बनकर भरपूर रूहानी प्यार लुटाओ

प्यार देकर सुख पाने की मर्यादा उन्हें सिखाओ
मर्यादाओं को स्नेह का साधन अनुभव कराओ

मनोकामना पूर्ण करने लायक खुद को बनाओ
खुद को वरदानीमूर्त और सिद्धि स्वरूप बनाओ

ज्ञान का हर विषय विधिरूप कितना अपनाया
सिद्धि स्वरूप का तुमने अनुभव कितना पाया

मनसा वाचा कर्मणा तुमने अवस्था कैसी बनाई
दुख की दुनिया के प्रभाव से कितनी मुक्ति पाई

साक्षी होकर खुद को ऊंची अवस्था में टिकाओ
हलचलमुक्त होकर विजयीरत्न खुद को बनाओ

सागर बाप को अपने प्यार के सागर में समाओ
वरदानीमूर्त बनकर बाप का साक्षात्कार कराओ

सोते उठते और सपनों में भी सेवा करते जाओ
हर सेकण्ड और श्वांस ईश्वरीय सेवा में लगाओ

अपने संग औरों के पुरुषार्थ की स्पीड बढ़ाओ
सेवाधारी का लेबल अपने मस्तक पर लगाओ